ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 50 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 फरवरी, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 फा.कृ.-01

आर्य समाज औरंगाबाद–मितरौल, जिला–पलवल, हरियाणा का 83 वां वार्षिकोत्सव सफलता के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी ने धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में अभूतपर्वू कार्य किये – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज एक वैचारिक क्रांति है – स्वामी श्रद्धानन्द

आर्य समाज औरंगावाद–मितरौल, जिला–पलवल, हरियाणा का 83वाँ वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण महायज्ञ 10 से 13 फरवरी, 2022 तक बड़ी सफलता के साथ आयोजित हुआ। 12 फरवरी, 2022 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य श्री स्वदेश जी, युवा संन्यासी श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल गोमत, अलीगढ़ के अधीष्ठाता महात्मा श्रद्धानन्द सरस्वती, पं. उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ–आगरा आदि संन्यासी एवं विद्वानों के अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कल्याण वेदी, श्री ओमवीर आर्य, ज्योति आर्या एवं रोशनी आर्या, श्री चतर सिंह आर्य, श्री रणजीत आर्य एवं श्री अमीचन्द्र आर्य आदि ने कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर आयोजित सामवेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सुशोभित किया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिदिन प्रातः 8 से 11.30 बजे तक यज्ञ प्रवचन एवं दोपहर बाद 1.30 से 5 बजे तक भजन एवं उपदेश का कार्यक्रम चला। 11 फरवरी, 2022 को शोभा यात्रा भी निकाली गई।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के ओज, तेज एवं प्रतिभा को अद्वितीय बताते हुए कहा कि महाभारत के पश्चात् आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही एक मात्र वेदों के प्रकाण्ड ऋषि थे। जिन्होंने लुप्त प्राय वेद ज्ञान की दुंदुभी बजाई और पुनः दुनिया के लोगों का आह्वान किया कि वेदों की ओर लौटो। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की प्रतिभा का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे कालजयी ग्रन्थ की रचना मात्र 3.5 महीने में कर दी थी। जबकि कार्ल मार्क्स ने 'दास कैपिटल' को लिखने में 34 वर्ष लगाये थे। स्वामी दयानन्द जी के तेज एवं ओज के समक्ष कोई ठहर नहीं पाता था। उनके साथ शास्त्रार्थ में जो भी पण्डित विद्वान आये वे पछाड़ खाकर लौटे। स्वामी दयानन्द जी सत्य के लिए सदैव बड़ी से बड़ी चुनौतियों को भी स्वीकार करने से संकोच नहीं करते थे। उन्होंने समाज की ज्वलन्त समस्याओं को गम्भीरता से समझा और उनके विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया।

महिलाओं की दयनीय स्थिति को देखकर वे द्रवित हुए बिना न रह सके और उन्होंने स्त्री शिक्षा को मानव समाज की उन्नति के लिए अत्यन्त आवश्यक बताया। बाल विवाह, सतीप्रथा, देवदासी प्रथा आदि कुरीतियों के विरुद्ध स्वामी जी ने मजबूती के साथ आवाज उठाई। उन्होंने अस्पृष्यता के विरुद्ध वेदों का प्रमाण देते हुए कहा कि जन्म के आधार पर किसी को अछूत नहीं कहा जा सकता। अतः सभी लोग अपने अच्छे कर्मों और योग्यता से आगे बढ़ने के अधिकारी हैं। स्त्री, शूद्रो न धीयताम् के नारे को उन्होंने सिरे से नकार दिया। स्वामी दयानन्द जी ने गोरक्षा, हिन्दी भाषा, अनिवार्य समान एवं निःशुल्क शिक्षा तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी प्रेरणा से अनेक क्रांतिकारियों ने आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्यामजी कृष्ण, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल व शहीदे आजम भगत सिंह आदि के नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखे हुए हैं, ये और ऐसे ही अनेक स्वतंत्रता सेनानी स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे। दुर्भाग्य की बात है कि स्वतंत्रता आन्दोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देश में अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, किन्तु आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कोई नाम तक लेने को तैयार नहीं है। चन्द संकीर्ण विचार एवं साम्प्रदायिक विचारधारा के लोग इतिहास को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं और महर्षि दयानन्द जी के योगदान को नगण्य किया जा रहा है। आर्य समाज के जागरूक सदस्यों को इस षड्यन्त्र को समझने की जरूरत है और जो लोग स्वामी दयानन्द जी की उपेक्षा करते हैं और अन्य महापुरुषों के गुणगान में लगे हुए हैं, उन्हें यह बताने की जरूरत है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के बराबर इस युग का कोई भी महापुरुष किसी भी दृष्टि से बराबरी नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द जी का नाम आधुनिक दार्शनिकों की सूची से हटाकर वे लोग अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय दे रहे हैं। अतः आर्य समाज को ऐसी प्रवृत्तियों के विरुद्ध सावधान होने की जरूरत है।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्कूलों, कालेजों में पढ़ाये जा रहे स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह की कोई चर्चा नहीं होती, जबकि भारत सरकार ने चार हजार स्वतंत्रता सेनानियों को ताम्र पत्र एवं पेंशन देकर सम्मानित किया था।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान के पश्चात् आर्य समाज के अधिकारियों ने स्वामी जी को ओ३म् पट्ट पहनाकर अभिनन्दन किया। मुख्य रूप से आर्य समाज के प्रधान श्री शिव सिंह आर्य, मंत्री मा. मोहरपाल जी एवं कोषाध्यक्ष श्री ठाकुर लाल आर्य व श्री चन्द्रभान आर्य, श्री श्याम सिंह आर्य, श्री कर्ण सिंह आर्य, महाशय श्रीचन्द्र आर्य, श्री तेजपाल मट्ठर, श्री रूपचन्द्र आर्य, कुंवर रमेश चन्द्र, श्री धर्मेन्द्र मलिक, श्री महेश अग्रवाल, श्री यादराम आर्य एवं श्री गणेशदत्त आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा भजनोपदेशक श्री भजन लाल आर्य को भी श्रद्धांजलि अर्पित की और उन्हें आर्य समाज का एक समर्पित व्यक्तित्व बताया। श्री भजनलाल जी के सुपुत्र श्री दुलीचन्द्र आर्य तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों ने भी सभा प्रधान जी का स्वागत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की और मंच का कुशल संचालन ब्र. राजदेव नैष्ठिक (राजू आर्य) ने संभाला।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज को एक वैचारिक क्रांति बताया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज कोई सम्प्रदाय नहीं है बल्कि विचारों के माध्यम से समाज को बदलने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे सप्तक्रांति कार्यक्रम को समय की मांग बताया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ऋषि दयानन्द जयन्ती फाल्गुन वदी दशमी तद्नुसार 26 फरवरी, 2022 के उपलक्ष्य में विशेष लेख

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी जन्मतिथि

–डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

19वीं शताब्दी में धार्मिक तथा सामाजिक जगत् में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास और अनैतिकता के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद फूंकने वाले, सत्य सनातन विशुद्ध वैदिक धर्म के पुनरूद्धारक तथा आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मतिथि के सम्बन्ध में संक्षेप में यहाँ विचार प्रस्तुत किया जा रहा है :–

स्वामी दयानन्द जी की प्रारम्भिक जीवनी की जानकारी स्वामी जी द्वारा स्वलिखित आत्मकथा (जो थियोसोफिस्ट पत्रिका में तीन किश्तों में छपी थी – अक्टूबर, 1879, दिसम्बर, 1879 तथा नवम्बर, 1980 ई.) से मिलती है। इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अपने 'पूना प्रवचन' के अन्तिम दिवस 4 अगस्त, 1875 ई. को भी अपने जीवन चरित्र के कतिपय बिन्दुओं पर प्रकाश डाला था। इन्हीं के आधार पर तथा अपने द्वारा किये गये अनुसंन्धान के आधार पर धर्मवीर पं. लेखराम तथा पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने भी स्वामी जी की विस्तृत जीवनी लिखी है। स्वामी जी की जीवनी के अनुसंधान तथा लेखन में आर्य समाज के प्रसिद्ध बीसियों विद्वानों ने भारी परिश्रम किया है। उन सभी का नामोल्लेख करूँ तो लेख विस्तृत हो जायेगा।

स्वामी जी ने अपना जन्म संवत् 1881 विक्रमी बतलाया है। अपने विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत संस्कार, शिवरात्रि का व्रत, भगिनी की मृत्यु, चाचा का देहावसान और गृह त्याग के समय अपनी वयया अवस्था तथा वर्ष संवत् का उल्लेख किया है। स्वामी जी ने शिवरात्रि का व्रत अपने चौदहवें वर्ष के प्रारम्भ में किया था। स्वामी जी ने गृह का त्याग अपनी आयु के 21 वर्ष पूरा होने पर 22वें वर्ष के प्रारम्भिक महीनों में किया था जो वर्ष संवत् की दृष्टि से 1903 विक्रमी संवत् था। इन सब प्रमाणों के आधार पर पं. लेखराम ने स्वामी जी का जन्म माघ या फाल्गुन मास में अनुमान किया। पं. भगवद्दत्त जी ने भी इस अनुमान की पुष्टि की। इन सभी प्रमाणों के आलोक में 1956 ई. से लेकर 1960 ई. तक सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने विचार–विमर्श जारी रखा। 23 जुलाई, 1960 ई. को धर्मार्य सभा ने जो निर्णय लिया उसकी पुष्टि

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने 2 अप्रैल, 1967 ई. को की। इस निर्णय का भाव यह था कि स्वामी जी की जन्मतिथि 12 फरवरी, 1825 ई. (शनिवार) है। देसी तिथि के अनुसार फाल्गुन वदी कृष्ण पक्ष दशमी 1881 विक्रम संवत। इसी तिथि फाल्गुन वदी दशमी को प्रतिवर्ष स्वामी दयानन्द जी की जयन्ती मनानी चाहिए। भारतवर्ष के अनेक प्रसिद्ध आर्य समाजों द्वारा फाल्गुन वदी दशमी से चतुर्दशी शिवरात्रि तक पाँच दिनों का विशेष कार्यक्रम मनाया जाता है। इसमें स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस तथा शिवरात्रि अर्थात् बोधरात्रि अथवा बोध दिवस दोनों पर्वों (त्यौहारों) का समावेश हो जाता है।

फाल्गुन वदी दशमी 1881 वि. तिथि के निर्णय पर पहुँचने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रो. भीमसेन शास्त्री (कोटा, राजस्थान) ने निभाई थी। उन्होंने ऋषि के बाल्य जीवन की घटनाओं के अनुक्रम के आधार पर ऐतिहासिक तथा तार्किक दृष्टि से यह निश्चय किया कि ऋषि की जन्म तिथि फाल्गुन वदी सप्तमी के पश्चात् तथा शिवरात्रि से पूर्व अष्टमी से लेकर त्रयोदशी के मध्य सीमित हो जाती है। ऋषि के बचपन का नाम मूलशंकर था। इस नाम से ऋषिवर के शिष्य और लेखन कार्य में उनके सहयोगी पं. ज्वालादत्त शर्मा तथा परम ऋषिभक्त ठाकुर मुकुन्द सिंह जी रईस दलेसर आदि अनेक पुरुष उनके जीवनकाल से ही परिचित थे। ऋषि के इस नाम का कारण उनका मूल नक्षत्र में जन्म लेना था। अष्टमी से लेकर त्रयोदशी तक की तिथियों में 'मूल' नक्षत्र दशमी तथा एकादशी को था। दशमी में वह अति स्वल्पकाल तथा एकादशी में वह 57 घटिका था। परन्तु व्यवहारिक सूर्योदय तिथि को ध्यान में रखकर उनकी जन्मतिथि फाल्गुन वदी दशमी (शनिवार) मानी गई, जिसके अनुसार ई. संवत् की दृष्टि से 12 फरवरी, 1825 ई. है।

नोट : विशेष जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक 'महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्म तिथि' लेखक डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री (प्रकाशक हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डौन सिटी, राजस्थान, तृतीय संस्करण, 2015 ई., मूल्य 60/– रुपये) पढ़नी चाहिए।

– अमेठी–227406, उत्तर प्रदेश
मो.:–9416185521

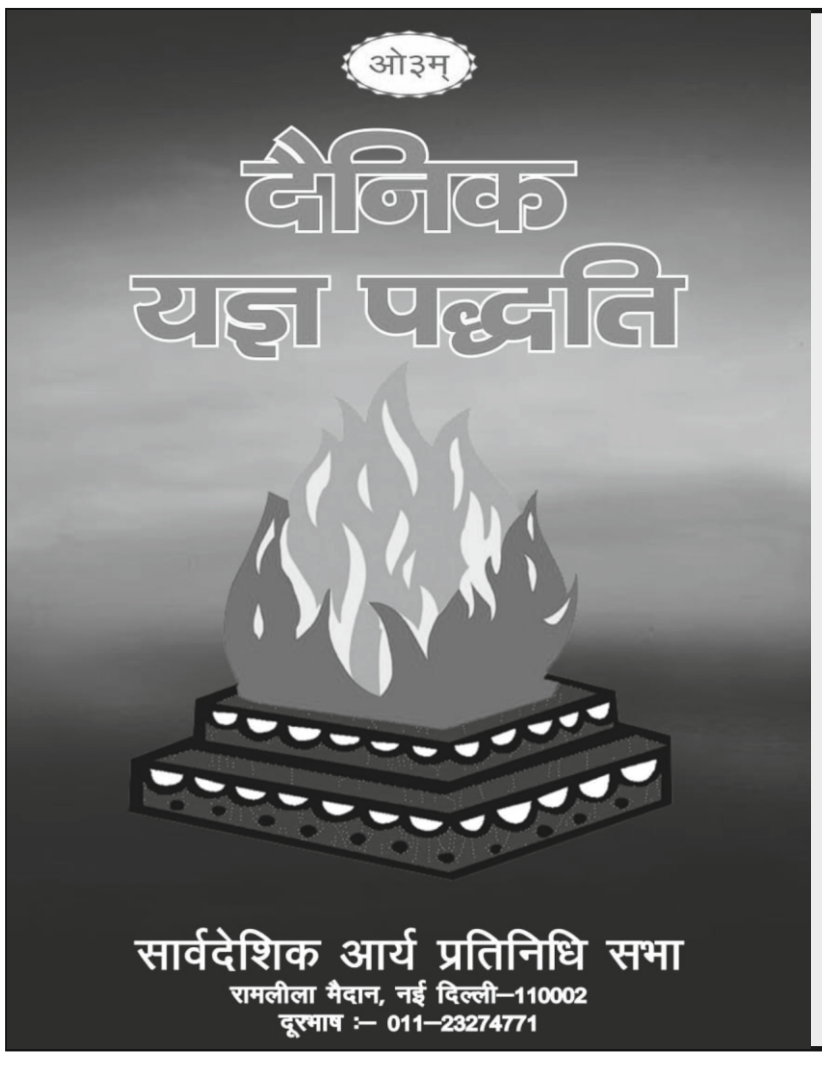

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस और बोधोत्सव का कार्यक्रम आम जनता के बीच आयोजित करके जागरूकता फैलायें

धार्मिक अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार, नशाखोरी तथा अन्य कुरीतियों के विरुद्ध आर्यजन उठायें जोरदार आवाज

– स्वामी आर्यवेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने वेदों का अनुशीलन किया और उन्हीं के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक इन सभी विषयों पर प्रकाश डालकर उसको सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने अवतार वाद, जन्म पत्र, श्राद्ध इत्यादि का तर्कपूर्ण विरोध करते हुए, समाज को जगाने का कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। आज देश पुनः भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातपात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण, पाखण्ड सहित अनेकों कुरीतियों से जकड़ा हुआ है। समय की पुकार है कि समाज में अत्यन्त गहराई तक व्याप्त अन्ध विश्वासों, कन्या भ्रूण हत्या तथा नशाखोरी को जड़ से उखाड़ फेंका जाये और अन्धविश्वास, कुसंस्कारों, कुरीतियों को दूर करने का महर्षि का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाये।

नव-जागरण के पुरोधा, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस इस वर्ष फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत् 2078 तदनुसार 26 फरवरी 2022 दिन शनिवार तथा ऋषि बोधोत्सव 1 मार्च, 2022 मंगलवार को पड़ रहा है अतः इन पावन पर्वों को अत्यन्त धूम धाम से समारोह पूर्वक अपने-अपने क्षेत्र में मनाएँ।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्ग दर्शन के ही कारण है। स्वामी जी ने यह ज्ञान हम तक पहुँचाया है इसके लिए हम सब सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारों को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाकर अन्य बन्धुओं को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहें। हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों और अन्ततः समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना।

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के पर्वों के अवसर पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें और यह आयोजन आर्य समाज से बाहर निकल कर जैसे पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर किये जायें तो अत्योत्तम रहेगा। इन बृहद यज्ञों में आर्य सदस्यों, परिवारों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाना चाहिए। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील विद्वान आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन साधारण को वैदिक, आध्यात्मिक तथा श्रेष्ठ विचारों के द्वारा सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके। अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं को आयोजित करें। ''सुखी परिवार कैसे रहे'' यदि इस विषय पर गोष्ठियाँ आयोजित की जायें तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

इस अवसर पर महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भी प्रेरणास्पद हो सकता है। इस कथा से सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकता है।

अत्यन्त आवश्यक है कि महर्षि जन्म दिवस से लेकर ऋषि बोधोत्सव तक आर्य समाज भवनों पर विशेष रोशनी का प्रबन्ध किया जाये तथा प्रत्येक आर्य अपने-अपने घरों को भी दीपावली की तरह से सजायें। प्रत्येक आर्य की छत

पर ओ३म् ध्वज अवश्य ही लगा होना चाहिए।

26 फरवरी से 1 मार्च, 2022 तक प्रत्येक आर्य समाज से प्रभात फेरी निकाली जानी चाहिए जिसमें आर्यजन परिवार सहित भारी संख्या में प्रातः काल महर्षि तथा प्रभु भक्ति के गीत गाते हुए निकलें, हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भजन गाते हुए, जन समूह अवश्य ही आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। इस अवसर पर महर्षि तथा आर्य समाज से सम्बन्धित लघु साहित्य भी वितरित किया जा सकता है।

अपने-अपने आर्य समाज मंदिरों में या सार्वजनिक स्थानों पर भाषण या चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करके समस्त प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप महर्षि जीवन चरित्र या सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार स्वरूप वितरित करें। आर्य शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार के आयोजन अपने-अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य ही आयोजित करने चाहिए।

क्षेत्रीय जनता को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरित करें।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारी आर्य समाज की गतिविधियाँ सन्तोषजनक है? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है?

महर्षि जन्मोत्सव के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों, राजनीतिक तथा धार्मिक नेताओं तथा अपने समाज के सदस्यों को शुभ कामना सन्देश भी भेजें तथा पोस्टर भी दीवारों पर चिपकवाएँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतने उपकार हम सबके ऊपर हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। सबसे अमूल्य उपकार वेदों के प्रति जागृति, वेद प्रचार व वेद मार्ग का रास्ता बताना है, क्योंकि वेद मार्ग पर चलकर हम सब कुछ श्रेष्ठ बना सकते हैं। बस आवश्यकता है कि हम महर्षि की भावना को समझें। यदि हम सच्चे आर्य समाजी हैं तो उनके मार्ग पर चलकर उनके समस्त कार्यों को आगे बढ़ायें। महर्षि जन्मोत्सव के इस पावन पर्व पर समस्त ऋषि भक्त आर्यजन रचनात्मक कार्यों के द्वारा आर्य समाज को उठाने का भरसक प्रयास करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तत्कालीन समस्याओं के निवारण के साथ-साथ उस समय व्याप्त भ्रष्टाचार के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाई थी। आज देश उस समय से कहीं अधिक भ्रष्टाचार कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड और नशोखोरी में लिप्त है। जनता मंहगाई गरीबी, भुखमरी आदि आर्थिक कष्टों से पीड़ित है और दूसरी तरफ अरबों रुपये के घोटाले दिन प्रतिदिन होते जा रहे हैं। जनता की गाढ़ी कमाई को स्विस बैंकों में रखा जा रहा है। भ्रष्टाचार सिर चढ़कर बोल रहा है। जनता का काम बगैर रिश्वत दिये नहीं हो सकता। आज आवश्यकता इन तमाम बुराइयों की जड़ भ्रष्टाचार से आमने-सामने की लड़ाई लड़ने की है। भ्रष्टाचार के साथ-साथ कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड और नशाखोरी रूपी राक्षस को समाप्त करने का कार्य आर्य समाज को प्राथमिकता के साथ करना है। सारे देश में व्याप्त इन बुराइयों के कारण देश की प्रगति में अवरोध पैदा हो रहा है। एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में इन कुरीतियों ने अपने पैर पसार लिए हैं। मेरा आप सब आर्यों से निवेदन है कि महर्षि जन्मोत्सव और बोधोत्सव के प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह यज्ञ हो, चाहे जन जागृति यात्रा हो, चाहे व्याख्यान हो, चाहे कार्यशालाएं हो प्रत्येक स्थान पर कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड और नशाखोरी के विरूद्ध आवाज उठाई जाए। आर्य समाज को इनके विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाते हुए एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ना है। आर्य समाज ही इस सामाजिक बुराई से जनता जनार्दन को त्राण दिला सकता है। महर्षि जन्मोत्सव पर होने वाले विशेष यज्ञों में उक्त कुरीतियों के विरूद्ध एक आहुति आप सब अवश्य डालें।

- प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

!!ओ३म्!!

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी
संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत
स्वामी इंद्रवेश जी महाराज
के 85वें जन्मदिवस के अवसर पर

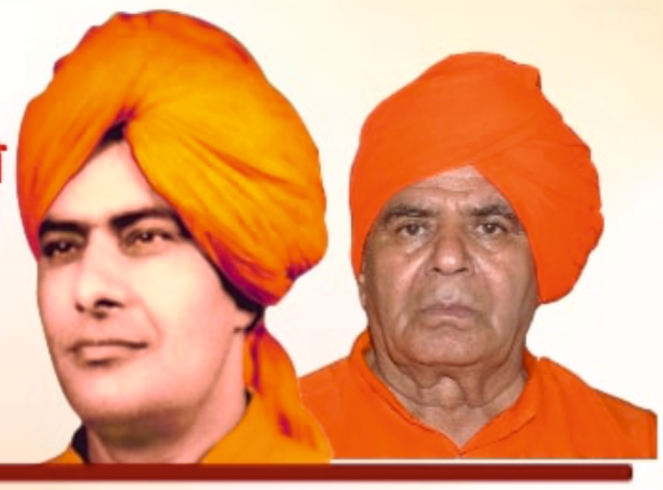

15वां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनाँक:- मंगलवार ,1 मार्च से रविवार,13 मार्च 2022

स्थान:- स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक(हरियाणा)

समय:- प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 व सायं : 3 से 6 बजे

ब्रह्मा:-
स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती
(हिमाचल)

अध्यक्षता:-
स्वामी आर्यवेश जी, सभा प्रधान

संकल्प

इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित शिक्षाविद, डॉक्टर, वकील, जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक नेता एवं हजारों छात्र - छात्राएं तथा स्त्री पुरुष आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

कार्यक्रम में समय समय पर वैदिक विद्वानों व भजनोपदेशकों के
माध्यम से भजन व प्रवचन के विशेष कार्यक्रम भी चलते रहेंगे।

आप सभी परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

आयोजक

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

9416630916, 9354840454, 9468165946

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 44वाँ अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वेबिनार के माध्यम से सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में तीनों दिन अनेक सम्मेलनों का किया गया आयोजन

स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का अविस्मरणीय योगदान रहा है – स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द जी के मानव जाति पर अनेकों उपकार हैं –अनिल आर्य

विश्व पटल पर आर्य समाज को कार्य योजना देनी होगी –डा. अशोक कुमार चौहान

यज्ञ, योग, ध्यान से विश्व बंधुत्वता मजबूत होगी –भुवनेश खोसला

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 44वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में "त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का उद्घाटन शुक्रवार 11 फरवरी 2022 को हुआ, जिसमें प्रथम सत्र में आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन जूम एप पर ऑनलाइन किया गया। वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी (हरिद्वार) ने यज्ञ के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी से पूर्व भक्ति के नाम पर अनेक आडम्बर हुआ करते थे किन्तु स्वामी दयानन्द ने भक्ति के सत्य मार्ग को यज्ञ के रूप में संसार के लिए प्रशस्त किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के सानिध्य में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन में वैदिक विदुषी विमलेश बंसल ने कहा कि इस सम्मेलन में देश–विदेश से ऑनलाइन जुड़े लोगों को देखकर प्रसन्नता हो रही है, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी को पुरुष के समान अधिकार दिलवाया। स्त्री जाति के लिए उन्होंने शिक्षा के द्वार खोल दिए। आर्य समाज ने बाल विवाह, सती–प्रथा जैसी कुरीतियाँ बन्द करवाई। विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार प्रदान कर आर्य समाज ने नारी सशक्तिकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि नारी का करो सम्मान तभी बनेगा देश महान।

मुख्य वक्ता वैदिक विदुषी प्रो. आयुषी राणा (मेरठ) ने कहा कि आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ अग्रणी है और देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारत का नाम ऊँचा कर रही हैं। माता निर्माता होती है वो चाहे तो किसी को राम, तो किसी को रावण भी बना सकती है। इसलिए महिलाओं को शिक्षित करना वर्तमान परिस्थितियों में अनिवार्य है जिससे वे आने वाली पीढ़ियों को शिक्षित कर सकें।

विशिष्ट अतिथि प्रो. आर्यव्रती बुलॉके (डी. ए. वी. कॉलेज, मॉरिशस) ने 'माँ' पर एक सारगर्भित रचना सुनाई और भारत व विदेशों में महिलाओं के वर्तमान नेतृत्व का वर्णन किया और कहा कि स्वामी दयानन्द जी और आर्य समाज की शिक्षाओं के कारण ही आज महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है।

मंच संचालिका श्रुति सेतिया ने कहा कि ऋषि देव दयानन्द जी ने महिलाओं के उत्थान में जो भूमिका निभाई इसके लिए उन्हें युगों–युगों तक याद किया जाता रहेगा।

महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए ऑस्ट्रेलिया से प्रेमा हंस ने कहा कि संस्कृत और संस्कृति भारतीयता की आत्मा है। संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है। विदेशों से ज्यादा भारत में ही बच्चों में संस्कारों का निर्माण हो सकता है, हम विदेशों में रहकर भी अपनी भारतीय संस्कृति का परचम फहरा रहे हैं। न्यूजीलैंड से उर्मिला सचदेवा ने भी वर्तमान संदर्भ में नारी की भूमिका पर विचार रखे।

इस अवसर पर वैदिक विदुषी गायत्री मीना मंत्री आर्य समाज नोएडा, प्रि. अंजू मल्होत्रा (कालका डेंटल कॉलेज, मेरठ) उर्मिल आर्या ने भी मार्गदर्शन दिया। गायिका सुदेश आर्या, पिंकी आर्या, दीप्ति सपरा, प्रतिभा कटारिया, राज कुमारी सरदाना, रचना आहूजा, जनक अरोड़ा आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर जूम, यूट्यूब एवं फेसबुक पर भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया व मुख्य रूप से सर्वश्री महेंद्र भाई, यशवीर आर्य, आनंद प्रकाश आर्य (हापुड़), प्रवीण आर्य, सुभाष शर्मा, मंगल सिंह (गाजियाबाद) से उपस्थित रहे।

शनिवार 12 फरवरी 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 198वें जन्मोत्सव पर उनके उपकारों को स्मरण किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा है, परंतु आर्य समाज के कार्यों को इतिहास में समुचित स्थान नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी एक क्रांतिकारी एवं समाज सुधारक थे। सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द जी ने देश को आजाद कराने के लिए गाँव–गाँव एवं शहर–शहर में जाकर अलख जगाई। स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके एक क्रांतिकारी संगठन तैयार किया और आर्य समाज के माध्यम से देश के लिए अनेक कार्य किये। स्वामी दयानन्द जी से प्रेरित होकर आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और देश को आजाद कराया। आर्य समाज के इतिहास को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों को जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। आर्य समाज में नये लोगों को जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए और आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाकर लोगों को लाभान्वित कराना चाहिए। वर्तमान समय में आर्य समाज की तरफ लोग देख रहे हैं, आर्य समाज संगठन ही मात्र एक ऐसा संगठन है जो देश को उन्नति के मार्ग पर ला सकता है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान समय में देश में जातिवाद, सम्प्रदायवाद, नशाखोरी तथा पाखण्ड एवं अन्धविश्वास अपने चरम पर बढ़ता जा रहा है, जबकि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इन कुरीतियों पर करारा प्रहार किया था और आर्य समाज के माध्यम से समय–समय पर इन बुराईयों के विरुद्ध आन्दोलन होते रहते हैं। जातिप्रथा मनुष्यकृत है, ईश्वरकृत नहीं। परमात्मा ने सब मनुष्यों को मनुष्य के रूप में उत्पन्न किया है और बच्चा पैदा होने के बाद अपने माता–पिता और परिवार द्वारा प्राप्त जाति के साथ जोड़ा जाता है। स्वामी दयानन्द जी ने जन्मना जाति के आधार पर ऊँच–नीच, छूआछूत एवं छोटे–बड़े का भेद पूरी तरह से अवैदिक घोषित किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की पहचान गुण, कर्म, स्वभाव से होनी चाहिए। आज देश को एक सूत्र में पिरोने की आवश्यकता है और इस कार्य को कोई कर सकता है तो वह है आर्य समाज संगठन। इसलिए इस समय हम सबकी और अधिक जिम्मेदारी बन जाती है कि देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करने के लिए आगे बढ़कर कार्य करें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के मानव जाति पर अनेकों उपकार हैं जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर श्रेष्ठ लोगों को संगठित किया और वेदों की पुर्नस्थापना की। उन्होंने पाखण्ड और अंधविश्वास पर सीधा प्रहार किया व लोगों के सोचने की दिशा ही बदल डाली। स्वामी दयानन्द जी ने कहा कि कोई कितना ही अच्छा क्यों न हो, परन्तु शेष पृष्ठ 7 पर

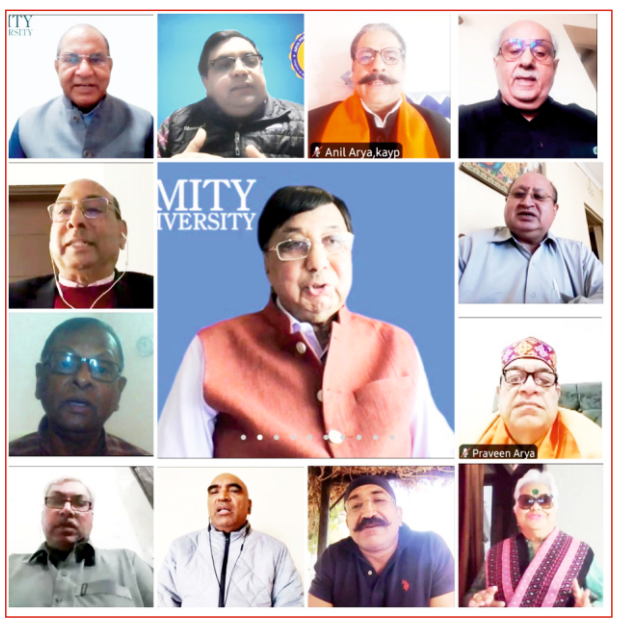

शिक्षा का वर्तमान सन्दर्भ और स्वामी दयानन्द सरस्वती

– एच. के. शर्मा, प्राचार्य

महर्षि दयानन्द का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब विदेशी हुकूमत भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पद–दलित कर भारतीयों के मन में हीन–भावना के तन्तु पनपा रही थी। काले और गोरे का जाति विभाजन कुचक्र चलाकर वे ऐसे भारतीय पैदा करने के प्रयत्न कर रहे थे जो शिक्षित होकर क्लर्की का काम कर सकें और रंग से भारतीय और मन से अंग्रेजियत के हामी हों। ऐसे समय में जब भारतीय शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे, तो भारतीय क्षितिज पर प्राची के अंक से ऐसा देदीप्यमान सूर्य स्वामी जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाजिक धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण कलांश को धोकर अपने उस प्रकाश से निर्मल बना दिया जो शाश्वत सत्य है। शैक्षिक एवं सामाजिक धरातल पर उन्होंने जो शंखनाद किया वह आर्यावर्त का श्रेष्ठ पुनर्जागरण कहा जा सकता है।

एक प्रकृतिवादी पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री जिसका नाम 'रुसो' था उसने शिक्षा जगत को नारा दिया था ''बालक स्वतन्त्र उत्पन्न होता है किन्तु धीरे–धीरे उसे बन्धन में बांध दिया जाता है अतः मैं कहता हूँ 'प्रकृति की ओर लौट चलो'।'' स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना, आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया, और छद्म वेशी पाखण्डों के खण्ड–खण्ड कर इस देश के आर्यजनों को नव चेतना से अनुप्राणित कर दिया। उन्होंने कहा जो सत्य है, जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार्य होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए। उन्होंने देश को बहरुपियों से बचाकर शिक्षा और समाज का भारतीयकरण सही अर्थ में कर डाला। 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद' की पुनीत भूमि पर रचे बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर उन्होंने नारा दिया वेदों की ओर लौट चलो।

वर्तमान समय की आवश्यकता और दृष्टिकोण के विस्तार से स्वामी दयानन्द अपरिचित नहीं थे। वे जानते थे–वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण, रुढ़िवादित और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी है। इसलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत प्रेत गण्डे ताबीज, ओझाओं के झाड़–फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री पुरुष दिगभ्रमित हो रहे थे। कर्मकाण्डी और पाखण्डी पोपों के चंगुल में बहुत लोग फंसे थे यहां तक कि नर बलि तक को मान्य मान लिया गया था। अभी कुछ दिन पूर्व गणेश जी की मूर्ति को दूध पिलाने की घटना ज्यादा पुरानी नहीं जब न केवल अशिक्षित नर–नारियों ने अपितु अनेक शिक्षितजनों ने भी इसे सत्य मानकर दिन छिपते छिपते मूर्ति को दूध पिलाया था। पितृ श्राद्धों और नमः तुम्बाय के खोखलेपन आज भी जन–मन को बहका रहे हैं। महर्षि ने इन सामाजिक विसंगतियों को दूर कर तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का कवच देकर सामाजिक शिक्षा में एक अध्याय जोड़ा। पाखण्ड खण्डिनी ध्वज फहराकर लोगों को गुमराह न होने की शिक्षा दी। समाज को सुशिक्षित और सुसंस्कारित करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। सामाजिक परिवर्तन की 'शिक्षा' संवाहिका कही जाती है। और तर्क के डण्डे से विष कुंभों को महर्षि दयानन्द ने चूर–चूर कर समाजोनति का शैक्षिक मार्ग प्रशस्त किया।

किं बहुना, महर्षि जानते थे कि उपदेशों का प्रभाव स्थायी चिकित्सा नहीं है। पाश्चात्य विद्वान और शिक्षाविद सुकरात की यह विशेषता थी कि वह लोगों को प्रश्नोत्तर शैली से अपनी बात समझता था। आजकल बी. एड. आदि में विद्यार्थियों को भाषण पद्धति के स्थान पर प्रभावी प्रश्नोत्तर शैली में पढ़ाने का आग्रह है। एक चैतन्य शिक्षक के नाते स्वामी जी ने जो कुछ जन–जागरण की शिक्षा दी वह प्रश्नोत्तर शैली में ही है। उनके शिक्षकीय आदान प्रदान की यह शैली प्रमाण सहित होने के कारण बड़ी प्रभावी थी।

आजकल साक्षरता पर बड़ा जोर दिया जा रहा है, सभी को शिक्षित करने का लक्ष्य है। इस दिशा में लोक जुम्बिश, शिक्षाकर्मी योजना, सरस्वती योजना और शिक्षा के सार्वजनीकरण की योजना इस हेतु चलाई जा रही है। इस पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं। एक सौ तिरसठ वर्ष पहिले इसका एक व्यावहारिक हल बताया जो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास से अविकल उद्धृत है –

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

''संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।'' उन्होंने आगे लिखा।

''राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि, पांचवें–आठवें वर्ष के आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।''

आजकल महिला शिक्षा की बात बहुत उभर कर आ रही है। बहुत से क्षेत्र आज भी महिला–शिक्षा में काफी पिछड़े हुए हैं। लड़कियों को 'चूल्हा–चक्की कर्म' का एक अंग अभी भी माना जाता है कम आयु में बालिकाओं का विवाह या लड़कियों का विद्यालय में नामांकन अभाव आज की ज्वलन्त समस्याएँ हैं। देश में नारी शिक्षा की दशा शोचनीय है। स्त्रियाँ लक्ष्मी से दासी की परिधि में सिमट रही हैं। बलात्कार, हिंसा, आत्महत्या जैसे विभत्स दृश्य नारी–अशिक्षा के मुखर पृष्ठ हैं, इन सबसे निजात पाने के लिए स्वामी जी ने नारी को सम्मानीय पद पर लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। लिंग भेद से अन्तर न करना, वेदाध्ययन की अधिकारिणी होना, आदि धरातलों पर उन्होंने नारियों को उनका अधिकार दिलाने में कोई कोर कसर नहीं रखी। 'रूपकंवर' जैसे सती प्रथा के दुराचरण को समाप्त करके उन्होंने नारियों की प्राण रक्षा का पुनीत कार्य किया। वे मासूम बच्चियाँ। वे निरी विधवाएँ।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों की शिक्षा की बात कह कर शैक्षिक समाज में एक क्रान्ति ला दी। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा –

- लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।

- प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान उपनयन संस्कार होना चाहिए।

- लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न उनकी इच्छा के विरुद्ध।

- पुत्री को पुत्र के समान और विधवा को विधुर के समान अधिकार है।

आज के सन्दर्भ में जो आर्य कन्या विद्यालय/महाविद्यालय इस दिशा में शिक्षा का प्रसार करने में जुटे हैं, सचमुच वे शिक्षा जगत की महत्त्वपूर्ण और सामाजिक सेवा कर रहे हैं।

आजकल विद्यालयों/महाविद्यालयों में सह शिक्षा एक प्रचलित शिक्षा है सरकारी शिक्षालयों में संसाधनों के अभाव में कदाचित् इसे स्वीकारा गया है। किन्तु आये दिन प्रधानाध्यापकों/आचार्यों के सम्मुख (सह शिक्षागत दोषों के परिणाम स्वरूप) छात्राओं की प्रायः शिकवा शिकायतें, अशोभनीय व्यवहारगत हरकतों की दास्तानें सुनने देखने में आती हैं। वयस्क किशोर–किशोरियों के मध्य विषम लिंगियों के प्रति आकर्षण के यह दृश्य मनोवैज्ञानिक सत्य हैं। इसे ध्यान में रखकर स्वामी जी ने कहा था – लड़के और लड़कियों के अलग–अलग विद्यालय हों और इनमें एक दूसरे का आवागमन वर्जित हो। वर्तमान समय में समानता का मौलिक अधिकार दिया गया है। शिक्षा जगत में शैक्षिक अवसरों की समानता 'Equal opportunites of Education' बहुचर्चित पाठ्य प्रकरण है और इसके विभिन्न अर्थ दिये जा रहे हैं। स्वामी जी की पारखी दृष्टि से यह ओझल नहीं हो सका और उन्होंने 'समान शैक्षिक अवसर' प्रकरण पर अपना मन्तव्य इस प्रकार व्यक्त किया है –

यदि वेदों का आश्रय लिया जाये और तर्क के आधार पर सोचा जाये तो मानव मानव में कोई भेद मालूम नहीं होता। वेदों में कहा गया है कि ''एकैव मानुष जाति।'' स्वामी जी ने समस्त मानव जाति को एक मानते हुए उसके आचरण को प्रधानता दी है। उन्होंने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप सभी को शिक्षा प्रदान करने की बात कही। अवर्ण और सवर्ण के जन्मगत भेद गर्तों को जातिगत, धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने की दृष्टिमति देते हुए कहा –

''जो दुष्ट कर्मकारी द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीचा माने तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।''

इस उद्धरण से शिक्षा के प्रति उनकी सोच और आचरण आधारित शिक्षा के लिए सभी को द्वार उन्मुक्ति का सामयिक परिचय मिलता है।

शिक्षा, यद्यपि एक सतत प्रवाहिता निर्झरणी है तथापि आज के संदर्भ में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को कभी नहीं भुला सकते। गंगा तो बहेगी, किन्तु महर्षि के हिमालयी उद्गम स्थलों की अनदेखी करना हमारी भूल होगी। महर्षि दयानन्द जी उदात्त भावनाओं और नैसर्गिक बोध के तत्त्वेत्ता थे। देश के अग्रणी चिन्तक, समाज सुधारक, क्रान्ति के अग्रदूत, शैक्षिक दृष्टिदाता, संस्कृति के शाश्वत कोष मातृभाषा, मातृ संस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति उनके मन में अगाध लगाव था। उनका शैक्षिक चिन्तन इसी लगाव से प्रभावित था। 'भारत भारतीयों के लिए है' और इसकी शिक्षा नीति रीति भी भारतीयता से परे नहीं हो सकती। बापू ने 'हरिजन' के एक अंक में सन् १९२२ में लिखा था दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।'' जिस देव दिव्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने शिक्षा के माध्यम से जाति संप्रदाय विहीन समाज की संरचना का, नारी के सम्मान का, निरक्षरता निवारण का और सुसंस्कारिता की शिक्षा का जो आलोक भारतीय खितिज से हमें परोसा है उस देदीप्यमान सूर्य को शत–शत नमन।

;fn u vkrk no n;kuan

–विमलेश बंसल 'आर्या'

पंच यज्ञ घर–घर न होता, दूर विकृति न होती।
यदि न आते देव दयानंद, आर्य धरा रहती रोती।।
घटा टोप कालिमा अंधेरा, कोहरा बढ़ा जा रहा था।
विदेशियों की कुटिल धुंध से, सूरज ढका जा रहा था।
सत्य–अर्थ–प्रकाश न होता, सब दुनिया तम में सोती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
पीर मुहम्मद पोपों सारे, सर्प कुण्डली बने पिटारे।
चूहे और छछूंदर दोनों, कुतर रहे थे वस्त्र हमारे।
ब्रह्मा का स्थान न मिलता, बुरके में नारी होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
आओ हम सब आर्य विमल बन, ऋषि दयानंद को शीश झुकाएँ।
उनके पदचिह्नों पर चलकर, जग वैदिक उद्यान खिलायें।
वेद आर्य स्वाभिमान न जगता वैदिक संस्कृति क्या होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....

पताः 329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–65
चल दूरभाष–8130586002
E-mail : vimleshbansalarya69@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 44वाँ अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। उन्होंने देश भक्ति की भावना को जागृत किया जिससे प्रेरणा लेकर हजारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।

इस अवसर पर श्री रविदेव गुप्ता ने कहा कि आर्य समाज क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र रहा। अंग्रेजी सरकार भी आर्य समजियों से भय खाती थी। महर्षि दयानन्द जी की निर्भीकता को देखकर अंग्रेजों में भय व्याप्त हो गया। हम सबको स्वामी दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर सत्य के लिए लड़ाई लड़नी चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी ने यज्ञ करवा कर किया उन्होंने राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिलाया।

आर्य नेता नरेन्द्र आहुजा विवेक ने मित्रता की परिभाषा करते हुए कहा कि जो सुख–दुःख में साथ खड़ा हो व लाभ–हानि की चिंता न करे वही सच्चा मित्र होता है।

जिला व सत्र न्यायाधीश श्री सत्य भूषण आर्य ने कहा कि परिषद् ने 44 वर्षों से मित्र बनाने का ही कार्य किया है। सी. ई. ओ. प्रयागराज श्री अजय सहगल ने भी आर्य समाज की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए आगामी योजनाओं से युवाओं को जोड़ने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रवीण आर्य ने कहा कि संगठन में रहकर ही समस्याओं का निदान हो सकता है अतः हिन्दू समाज को आर्य समाज की विचाराधारा से जोड़कर मजबूत बनाने की आवश्यकता पर बल दिया जाना चाहिए।

इस सत्र में प्रमुख रूप से स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली), आचार्य विजय भूषण आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, ईश आर्य (हिसार), स्वतंत्र कुकरेजा (करनाल), सूर्य देव आर्य (जींद), आचार्य महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, आंनद प्रकाश आर्य (हापुड़), हरिओम शास्त्री (फरीदाबाद), नन्द किशोर पासवान, के. के. यादव, वीरेन्द्र आहुजा, ओम सपरा, देवेन्द्र भगत, पिंकी आर्य, अंजू आहुजा, दीप्ति सपरा आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाते हुए मित्रता को मजबूत बनाने पर बल दिया।

रविवार,13 फरवरी, 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 44वें वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन "अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन" में ऑनलाईन के माध्यम से 15 देशों के आर्य नेताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने 101 कुंडीय यज्ञ के साथ किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए एमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान जी ने कहा कि हमारे पास उच्च मूल्य, ज्ञान का भण्डार है लेकिन हमें प्रस्तुत करना नहीं आया। हमें विश्व पटल पर अपनी कार्य योजना देनी होगी भारतीय संस्कृति के गुण एवं लाभ समझाने होंगे तभी हमारी स्वीकार्यता होगी। जब बात लोगों की समझ में आयेगी तभी हम विश्व को आर्य बनाने में सफल हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज मानवमात्र के कल्याण की कामना करता है, सर्वे भवन्तु सुखिनः। यही हमारा आदर्श होना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के प्रधान भुवनेश खोसला ने कहा कि लोगों में भूख प्यास है, जानने की इच्छा है उस पर व्यवहारिक प्रयोग या प्रोजेक्ट बनाने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सिद्धांतों का क्रियान्वयन करने के लिए आर्य समाज को कृत संकल्पित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यज्ञ, योग व ध्यान को जीवन का अंग बनायें, जिससे हमारी आधारशिला मजबूत होगी।

वैदिक विद्वान विष्णुमित्र वेदार्थी ने कहा कि आज आर्य समाज की पहले से अधिक आवश्यकता है पूरे हिन्दू समाज को संगठित कर आर्य समाज को नेतृत्व प्रदान करना है।

युगांडा आर्य समाज के प्रधान श्री कुलदीप ओबेरॉय, पाकिस्तान से श्री रामचंद्र आर्य, मॉरीशस से श्री रामधोनी, नैरोबी केन्या से श्री विमल चड्ढा, दुबई से श्री विश्व मोहन आर्य आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं प्रदान की और विदेशों में और युवा पीढ़ी में भारतीय संस्कृति की महत्ता पहुँचाने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि आपने आधुनिक टेक्नोलॉजी के माध्यम से महर्षि दयानन्द के मंतव्यों को घर–घर तक पहुंचाया है। स्वामी दयानन्द त्रैतवाद को मानते थे ईश्वर, जीव और प्रकृति इनसे ही संसार चला करता है। कर्म फल की व्यवस्था भी उन्हीं की देन है उन्होंने सत्य को स्वीकार करके और असत्य को छोड़ने का संकल्प कराया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज एक वैचारिक क्रांति का नाम है, आओ हम सब संकल्प करें स्वामी दयानन्द की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिये कृतसंकल्प हों।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज के ज्वलंत मुद्दों का हल करके आर्य समाज विश्व में नेतृत्व प्रदान कर सकता है। साथ ही नई पीढ़ी को सुसंस्कारित करने के लिए एक लक्ष्य बना कर चलना होगा। आर्य समाज ईस्ट अफ्रीका के प्रधान डॉ. रजनी टेलर जी ने अफ्रीका में आर्य समाज की कार्य विधि का परिचय दिया।

इस अवसर पर आर्य नेता आनन्द चौहान, मृदुला चौहान, अजय चौहान, ओम सपरा ने शुभकामनाएं प्रदान की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य, अध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य, डा. आर. के. आर्य, यशोवीर आर्य, महेंद्र भाई, देवेन्द्र भगत, अजय सहगल, धर्मपाल आर्य, दुर्गेश कपूर ने भी मार्गदर्शन दिया।

गायिका पिंकी आर्या, चिंकी जैन, सुनीता आहूजा, प्रतिभा कटारिया, दीप्ति सपरा, किरण सहगल, कुसुम भंडारी, सुदेश आर्या, रविन्द्र गुप्ता, ईश्वर देवी आर्या (अलवर), राम कृष्ण शास्त्री (बहरोड़) जनक अरोड़ा, आशा आर्या, अंजू आहूजा, विजया खुल्लर आदि ने ऋषि महिमा के गीतों से सभी को भाव विभोर कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वेबिनार के माध्यम से तीनों दिन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। ●

उड़ीसा प्रान्त के जाने माने संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी का अकस्मात निधन

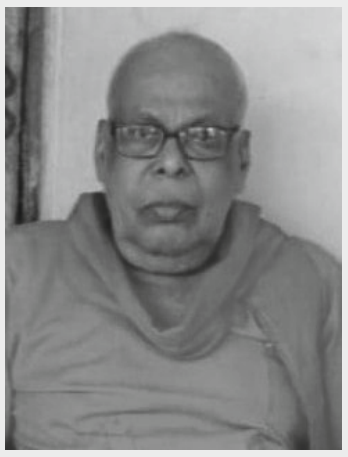

उड़ीसा प्रान्त के जाने-माने आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी का 31 जनवरी, 2022 को 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी मूल रूप से उड़िया भाषी होने के कारण मुख्य रूप से उड़ीसा प्रान्त में ही लगभग सभी जिलों के ग्रामीण अंचलों में घूम-घूमकर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया करते थे। उनका जन्म उड़ीसा के अनुगुल जिले के एक छोटे ग्राम में हुआ था। पहले वह महिमा धर्म के साथ जुड़े, परन्तु जब वह आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के सम्पर्क में आये तो उन्होंने उनके मार्ग दर्शन में आर्य समाज के विचारधाराओं का प्रचार-प्रसार एक परिव्राजक संन्यासी के रूप में समूचे उड़ीसा प्रान्त में करना प्रारम्भ कर दिया और जीवन के अन्तिम समय तक इसी कार्य में जुड़े रहे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने स्वामी प्रणवानन्द जी को गुरुकुल वेदव्यास आश्रम में रहकर आर्य समाज का कार्य करने के लिए प्रेरित करते थे, परन्तु स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज का कहना था कि मैं एक स्थान पर रहकर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकता, इसलिए पूरे उड़ीसा प्रान्त के ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में जाकर उन्होंने आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया। स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के मिशन के लिए समर्पित ऐसे कर्मठ आर्य संन्यासी का निधन आर्य समाज एवं उड़ीसा प्रान्त के आर्यजनों के लिए अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता पूज्य स्वामी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पहलवान श्री सूबे सिंह आर्य जी का देहावसान

ग्राम-नूना माजरा, जिला-झज्जर, हरियाणा के पहलवान श्री सूबे सिंह आर्य जी का विगत दिनों देहावसान हो गया है। श्री सूबे सिंह जी आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के कर्मठ कार्यकर्ताओं में से एक थे और अपने समय के प्रसिद्ध आर्य पहलवान के रूप में विख्यात थे। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये हिन्दी रक्षा, गोरक्षा, किसान आन्दोलन एवं शराबबन्दी सहित अनेक आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। वह पहले गुरुकुल झज्जर से जुड़कर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज (आचार्य भगवान देव) के साथ मिलकर आर्य समाज का कार्य करते रहे उसके पश्चात् उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज का कार्य प्रारम्भ किया और उनके परम सहयोगी बनकर तन-मन-धन से सहयोग किया। स्वामी इन्द्रवेश जी से आप प्रारम्भ से ही विशेष आत्मीयता रखते थे और उनके साथ सदैव जुड़े रहे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ भी पहलवान सूबे सिंह जी का पिछले लगभग 40 वर्ष से सम्बन्ध था। आर्य समाज के कार्यों के लिए पहलवान जी का सहयोग अन्तिम समय तक प्राप्त होता रहा। उनका परिवार आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है, विशेषकर उनके सुपुत्र श्री वेदपाल आर्य जी, आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं। ऐसे समाजसेवी पहलवान जी का निधन आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय पहलवान जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पंजाब निवासी श्री वीरेन्द्र कुमार गोयल जी को पुत्र शोक

पंजाब प्रान्त के जालन्धर निवासी श्री वीरेन्द्र कुमार गोयल एवं श्रीमती सरला (किरण) गोयल जी के सुयोग्य एवं होनहार 44 वर्षीय सुपुत्र प्रिय राकेश गोयल का युवावस्था में विगत दिनों निधन हो गया है। श्री राकेश गोयल का गुड़गांव के मेदान्ता अस्पताल में अनुभवी डॉक्टरों की देख-रेख में उपचार चल रहा था, किन्तु डॉक्टरों के सभी प्रयासों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। श्री राकेश गोयल एक होनहार नवयुवक थे और उनका पूरा परिवार आर्य समाज के विचारों से ओत-प्रोत है। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि वह बहुत ही मिलनसार एवं कर्मठ व्यक्ति थे, उनके निधन से जहाँ माता-पिता तथा परिवार को अपार दुःख पहुँचा है, वहीं मुझे भी व्यक्तिगत रूप से गहरा आघात लगा है। ऐसे युवा एवं होनहार नवयुवक के निधन से गोयल परिवार एवं आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता श्री राकेश आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के कार्यकर्ताओं के साथ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की महत्त्वपूर्ण बैठक 13 फरवरी, 2022 को हुई सम्पन्न

मध्य प्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव जी की सुपौत्री सौ. कां. ऋतिका के विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 12 फरवरी, 2022 को सायं इंदौर पहुँचे। जहाँ हवाई अड्डे पर मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य एवं उनके साथियों ने स्वामी जी का स्वागत किया। रात्रि प्रवास इन्दौर में करने के उपरान्त 13 फरवरी, 2022 को प्रातः 9 बजे चलकर 12 बजे सभा प्रधान जी खण्डवा विवाह समारोह में सम्मिलित हुए। वर–वधु को आशीर्वाद एवं परिवारजनों को शुभकामनाएं देने के पश्चात् सभा प्रधान जी ने दोनों प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के कार्यकर्ताओं के साथ महत्त्वपूर्ण बैठक की और आर्य समाज के कार्य को गति प्रदान करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक अन्याय, नशाखोरी, महिला उत्पीड़न तथा अश्लीलता आदि बुराईयों के विरुद्ध अभियान चलाने की आवश्यकता है। इसके लिए शीघ्र ही प्रान्तीय स्तर की बैठकें बुलाकर कार्य योजना तैयार करनी चाहिए। स्वामी जी ने युवा संगठन को भी सक्रिय करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर उपस्थित रहने वालों में मध्य प्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रभाशंकर तिवारी, मंत्री श्री जयनारायण आर्य, श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव, श्री आदित्य एडवोकेट–बुरहानपुर, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य अशोक नगर, श्री संजय गायकवाड़ इन्दौर, श्री विजय कुमार आर्य भोपाल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस विवाह समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त गुरुकुल होशंगाबाद के स्वामी ऋतस्पति, स्वामी ब्रह्मानन्द हिसार, स्वामी सुखदेव तपस्वी–दिल्ली आदि संन्यासी भी सम्मिलित हुए और वर–वधु को आशीर्वाद दिया। विवाह प्रक्रिया पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई। प्रसिद्ध युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने विद्वता पूर्वक वाग्दान एवं विवाह आदि सभी प्रक्रियाओं को सम्पन्न कराया। विवाह समारोह आर्य समाज का एक बड़ा सम्मेलन जैसा लग रहा था। आर्य समाज के सैकड़ों कार्यकर्ता दूर–दूर से इस अवसर पर उपस्थित थे। सभा प्रधान जी का भार्गव परिवार तथा आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष – 011–23274771, मो.:–9868211979, 8218863689
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।